International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.345-355

सिन्धी साहित्य में भारतीय संस्कृति और दार्शनिक चिन्तन की भावभूमि

डॉ. जितेन्द्र थदानी*

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति ईश्वर की प्राचीनतम, श्रेष्ठ एवं समृद्ध संस्कृति रही है। इसकी पुष्टि में श्रुति भी उद्घोष करती है–

Lkk iFkek lLdfrfo'ookjkA

¼;t| 7@14½

निश्चितरूप से वह भारतीय संस्कृति ही है जिसके द्वारा मानव ने मानवता को समझने की चेष्टा की। अनेक धार्मिक ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक साक्ष्यों के आधार पर यह निर्विवाद तथ्य भी स्थापित हो चुका है कि भारतीय मनीषा इस ईश्वर को प्राप्त होने वाली प्राचीनतम ज्ञाननिधि है। यही भारतीय संस्कृति ईश्वर की एकमात्र संस्कृति रही जिसके द्वारा पृथ्वी के सभी मानवों ने अपने–अपने चरित्र की शिक्षा ग्रहण की। मनुस्मृति में इस बात की पुष्टि इस प्रकार की है।

,rn n'k i lrL; ldk'kknx tUeu%

Lo Lo pfj=f'k{kju ifFk0;k loekuok%A

¼eu0 2@20½

विश्व की इस महान् एवं बहुआयामी संस्कृति का उद्भव एवं विकास सिन्धु नदी के तट पर हुआ जो और आगे चलकर वैदिक संस्कृति के रूप में प्रख्यात हुई। इसी सिन्धु घाटी के तट पर कालान्तर में एक और सभ्यता एवं संस्कृति विकसित हुई जिसे वर्तमान में सिन्धी सभ्यता के नाम से जाना जाता है। जिसकी प्रामाणिकता मोहनजोदडो की सभ्यता से सिद्ध हुई है। इसी सिन्धु नदी के तट पर ईश्वर की दो महान् संस्कृतियों का उद्भव हुआ एवं वैदिक (भारतीय) संस्कृति द्वितीय सिन्धी सभ्यता एवं संस्कृति। अपेक्षाकृत अर्वाचीन होने के सिन्धी संस्कृति में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के बीज विद्यमान है। न केवल संस्कृति अपितु सिन्धी भाषा में भी संस्कृत के शब्दों का प्रयोग तत्सम एवं तद्भवके रुप में न्यूनाधिक्य दृष्टिगोचर होता ही है। वैसे भी संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहा गया है।

^^Hkkry lLdr Hkk"kk dke/kqu% idhfrrkA

tuuh loHkk"kk.kk] foKkuL;k idkfj.khAA

न केवल संस्कृत भाषा अपितु साहित्य,दर्शन, एवं संस्कृति के बीज भी अन्य आर्यभाषाओं और साहित्य में प्राप्त होते है। सिन्धी साहित्य में भी संस्कृत भाषा के समान साहित्य एवं भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के बीज विद्यमान है। सिन्धी साहित्य के दैदीप्यमानाकाष में सूर्यवत् जाज्वल्यमान कवि शाह अब्दुल लतीफ भिटाई ने अपने ग्रन्थ शाह जो रसालो में परमात्मा का वर्णन करते हुए कहा है कि वह एक ईश्वर है जो सब कुछ जानता (सर्वज्ञ) है, सबसे बडा एवं सम्पूर्ण संसार का स्वामी है। एवं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी उसके ही सामर्थ्य से संचालित है। ईश्वर ही इस ब्रह्माण्ड में प्राचीनतम है। एवं इस सम्पूर्ण संसार में सर्वव्याप्त है।

* सहायक आचार्य (संस्कृत), स.पृ.चौ. राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, राजस्थान।

vofy vYyg vyhe vkyk vkye tk /k.kh]
-dkfn# ifgth dfnjr l] -dkbe vkg -dnhe]
okyh] okfgn] ogng] jkfTkd] jCCk jghe]
lk lkjkfg lpk /k.kh] pb gen gdhe]
dj ik.k djhe] tkMs tkM tgku th-

¼'kkg tk jlkyk 1@1½

i#"k ,on lo ;nHkr ;Pp Hk0;eA
mrke'rRoL;s'kkuk ;nUuukfrjksgfrAA
,rkokuL; efgekrk T;k;k'p i#"kA
iknk·L; b'ojk Hkrkfu f=iknL;ke'r fnfoAA

¼_Xon@i#"klDr 10@90 2]3½

v.kj.kh;kUegrk egh;k
ukRekL; tURkkfufgrk xgk;keA
redr% lk';fr ohr'kkdk
/kkrq i lknkUefgekuekRreu%A

¼dBkifu"kn 1@2@20½

आगे पुनः ईश्वर की सर्वव्यापकता का समर्थन करते हुए शाह लतीफ कहते है कि उस ईश्वर के लाखों हजारों शरीर नहीं अपितु करोडों शरीर है, जिनमें वह एक परमेश्वर निवास करता है।

djkMs dk;kÅ rfgft;] fy[kfu y[k gtkj]
thm lHkd fg thv l] njlu /kkjk /kkj]
fifj;fe] rfgtk ikj] dfgMk pb dhv pokA

¼'kkg tk yrhQ 1@16½

lgL='kh"kk i#"k% lgL=k{k lgl=ikrA
l Hkfe b'ojrk oRokR;fr"Bnn'kk³xyeAA

¼_Xon@i#"klDr 10@90@1½

इसी क्रम में भाई चैनराइ लुंडु सामी ने अपने ग्रंथ में निर्गुण निराकार एवं सर्वव्यापक ईश्वर की महिमा का गुणगान करते हुए उसे सूक्ष्म से सुक्ष्म एवं समीप से समीप व दूर से दूर माना–

l[ke [kk l[ke] vFkh jkg vthc th]
[k.k lk.k f[kE;k t] lkeh ne dne]
Tkdk vFkh de] il.k ef> fifj;fu t

¼lkehv tk lyksd 10@3½

rntfr rUUktfr rn nj r}fUrdA
rnUrjL; loL; rn loL;kL; ckár%AA

¼'kDy ;tosn 40@5½

इसी क्रम मे आगे उपनिषद् और गीता की वाणी का अनुसरण करते हुए उस परमात्मा को मन बुद्धि वाणी व इन्द्रियों से परे माना है। सामी के अनुसार परमात्मा के मन में एक से अनेक हेाने का विचार आया और उन्होने संसार की रचना है वह परमात्मा अगम अपार है जिसका ना आदि ना अन्त है वह इन्द्रियातीत है वह इस सम्पूर्ण संसार में अन्दर व बाहर भी है।

bNk j bf l jk#] fFk;k [-;kyhv t f[k;kye]
tfgtk vkfn u vr dk] udk ik# vkjk#]
eu cf/k ok.khv [kk ij] d# dj rfdjk#]
lkeh le>h lk#] lrfu fgd lk?kk d;k]

¼lkehv tk lykd 10@4½

bfUn;H;% ijk áFkk vFkH;'p ij eu%A
euLkLr ijk cf)c)jkRek egku ij%AA
egr% ije0;DRke0;Drkr i#"k% ij%A
i#"kkUUk ij fdfpRlk dk"Bk lk ij xfr%AA

¼dBkifu"kn 1@3@10]11½

bfUn;kf.k ijk.;kgfjfUn;H;% ij eu%A
euLr ijk cf);k c)% ijrLr l%AA

¼JhenHkkXonxhrk 3@42½

ईषावास्योपनिषद् में कर्म को प्रधान मानते हुए सैकडों वर्षों तक सत्कर्म करने की प्रेरणा दी। गीता के तृतीय अध्याय में भी पुनः कर्म करने का उपदेश और कर्म में ही अधिकार की बात कही गई। रामचरित मानस में भी

''जो जस करहि सो तस फल चाखा'' कहकर बुरे कर्मों से परे हटने सत्कर्मो के प्रति प्रेरणा एवं कर्मो का फल स्वयं ही भोगने का मार्ग बताया है, इसी बात को ''डॉ0 हरुमल सदारंगानी खादिम'' ने इस रूप में कहा है–

dfnjr Fkh oBh lHk [kk vx ikbl tk fglkc]
tk fc, [k rikb.k yb ek [kfn fc rikA

¼flU/kl lkj i0l0 91½

lHk tk l[k ftfu gMlk d;k vk]
frfu gfM;fu [kk l[k [k [kflt k

¼flU/kl lkj i0l0 95½

dloUuog dekf.k ftftfo"kPNr lek%A
,o Rof; ukU;Fkrk·fLr u de fyl;r ujAA

¼'kDYk ;tqosn 40@1½

Uk fg df'pR{k.kefi tkr fr"BR;dedrA
dk;r áo'k de lo% idfrtx.k%AA

¼JhenHkkXonxhrk 3@5½

भारतीय संस्कृति में गुरु का माहात्म्य सम्यक् प्रकार से गाया गया है। गुरु को ईश्वर तुल्य बताते हुए उनकी शिक्षाओं व आज्ञाओं के पालन शब्दशः करने का भी उल्लेख किया है। सिन्धी साहित्य भी गुरु के महत्त्व को प्रमाणित करते हुए गुरु व भगवान को एक ही मानते है।

शाह लतीफ कहते है– अहद माने अल्लाह (ईश्वर) और अहमद माने मुर्शिद (गुरु) तत्त्वतः एक ही है। दोनों के शब्दों में सिर्फ मकार का अन्तर है लेकिन दुनिया इस बात को ना समझते हुए व्यर्थ ही इस अन्तर मे उलझी है।

vgn vgen ik.k e] fop eh Qd A
vkg eLrxd] vkye bUghv xkfYg eAA
¼'kkg tk jlkyk@lj ;eu dY;k.k½
b'ojk x#jkRefr efrHkn foHkkfx.kA
0;keor 0;klrngk; Jhnf{k.kkerr;ue%AA
¼nf{k.kkefr Lrk=½

गुरु ही एक ऐसा तत्त्व हैः जो कर्त्तव्य अकर्त्तव्य की प्रेरणा देता है, जो विद्या प्रदान करता है, अविद्या एवं अज्ञान का नाश करता है, सदाचार, संयम त्याग, तपस्या की शिक्षा देता है व अन्त में ईश्वर के दर्शन भी करवा देता है।

Lkrxj y[kkb] vkre tkfr vf[k;fu lk]
fcuk ckny ty t] c[kk olkb]
vfo|k efy vUnj e] jgfu jkb]
fo¥k, okb] lkeh lfEg;k lt tA
¼lkehv tk lykd 83½

vKkufrfejkU/kL; Kkuk¥tUk'kykd;kA
p{k#Uehfyr ;u rLe Jh xjo UkeAA

यद्यपि परमात्मा सर्वत्र व्याप्त है फिर भी वह अज्ञान जीवों को तब तक प्राप्त नही होता जब तक उन्हे कोई सच्चा गुरु नहीं मिल जाता है। वह सत्गुरु ही अज्ञान के पर्दे को दूर कर ज्ञान चक्षु उद्घाटित कर परमात्मा का साक्षात्कार करवाता है।

कवि करीम कहते है– जो अपने गुरुशरण में जाकर जिज्ञासाओं को शान्त कर लेता है। वह संसार में नहीं भटकता। और गुरु से प्रश्न करने वाला ही वीर होता है क्योंकि वह अपने सभी संषयों का निवारण करवा लेता है।

t iN.kk lu ef>.kk] t iNfu l ohjA
¼djhe@flU/kh lkfgR; tk bfrgkl tryh½
xjk u ikl;r ;ŸkUukU;=kfi fg YkH;rA
x#i lknkr lo r iklukR;o u l'k;AA
¼LdUn ijk.k@o- [k.M dkfrd ekl 2@78½

शाह अब्दुल लतीफ कहते है–

मेरी नाव दरिया के तूफानी पानी में थपेडे खा रही है। हादी या मुर्शिद (गुरु) की मदद के बिना पानी भी हमवार और शान्ति नहीं सकता है।

jhv gejkgh gknhv t] ej u feM ekbA
yRQ lk.k y?kkb] yg# yg#fu fop ekAA
¼'kkg tk jlkyk½

शाह साहब आगे पुनः कहते है कि गुरु में उतना सामर्थ्य होता है कि वह श्रद्धावान् शिष्य को धुरधाम तक पंहुचा देते है चाहे वह नियमित अभ्यासी ना हो

Ekkg eukj: lkegk] iVfu eFk i;jA

ih: u Nn ikfg tk] rk.k nn nQjA ¼'kkg tk jlkyk½

अविद्या (अज्ञान) ही एक ऐसा तत्व है जो जीव को परमात्मा से अलग करता है एवं द्वैत बुद्धि उत्पन्न करता है। माया के स्वरूप पर सामी ने अपने ग्रंथ में इस प्रकार प्रकाश डाला है–

ek;k Hkyk,] fo/kk thm Hkje e:

v.k gn nfj;kg e] xkrk fur [kk,

lkeh fMl dhudh] eg eMghv‰ ik,

lfrx# tkxk,] r tkxh tM ik.k lk-

¼lkehv tk lykd1@03½

सामी कहते है – परमार्थ की दृष्टि से मिथ्या व व्यवहार की दृष्टि से सत्य ईश्वर द्वारा पैदा की गई नाम रुपात्मक सृष्टि ही माया है, जो तत्त्वतः मिथ्या होते हुए भी सत्य प्रतीत होती है। यह माया सत्त्व रज और तम तीनो गुणों से युक्त है। मिथ्या नाशवान व अस्थिर है।

ek;k Hkyk,] fo/kk thm Hkje e]

ik.k ifg tk ik.k e] oBk fo¥k,]

liu e lkeh p,] dkV tue ik,]

vfo|k iV ykg] tkxh fMl dhudh-

¼lkehv tk lykd 01@04½

भगवान् राम लक्ष्मण के द्वारा अयोध्या की प्रशंसा करने पर कहते है– हे लक्ष्मण स्वर्णमयी लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है क्योंकि जननी व जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है सिन्धी शायर हूंदराज दुखायल भी जन्मभूमि को जननी मानते हुए उसके दर्द को कम करने की बात कहते है व अपने वतन को मिश्री व शहद से भी मीठा बताते है।

gh efg tk oru] efg tk oru] efg tk oru]

ek[khv [kk feBjk] fefljhv [kk feBjkA

¼flU/k lkj @gnjkt n[kk;y½

vfi Lo.ke;h ydk u e y{e.k jkprA

tuuh tUe Hkfe'p Loxkfnfi xfj;lhAA

¼okfYefd jkek;.k @ ;)dk.M½

सिन्धी शायर कृष्ण राही भी जन्म भूमि को चन्द्रमा और तारों से अधिक हसीन व स्वर्ग से भी महान् मानते है। मातृभूमि से प्रेम और जन्मभूमि की प्रंशसा सिन्धी साहित्य में यत्र तत्र विकीर्ण है।

glhu bk pM rkfju [kk fc of/k glhu vk]

t dkb lx vk tgku e r ghv tehu vkA

tehu gnh mgk b mgk b vklekuh gnk]

u r gn exj ikb Hkh tgku gnkAA

¼flU/k lkj@d".k jkgh½

न केवल जन्मभूमि की प्रंशसा की गई है अपितु जन्म भूमि की रक्षा के लिए प्राण त्याग का विवेचन विविध कवियों के काव्यों में मिलता है जिनमें गोवर्धन शर्मा घायलु तो युवाओं का सम्बोधन भारत माता के लाल और भारतमाता के भाल के रूप में करते है और आह्वान करते है कि शिवाजी व तानाजी के समान देश की खातिर जीना और मरना है।

vk ekrkkmfu tk yky mFkk&vk Hkkjr tk Hkky mFkk]
vkTkknhv tk j[kiky mFkk&vk gj n’eu tk dky mFkkA
vTk ohj f’kokth rkukthv tk eku vIk[k dfj.kk vk]
fgu n’k t [kkfrj thv.kk vk] fgu n’k t [kkfrj efj.kk vkA

¼fIU/k IIkj Ik0I0 136½

शायर किशन चन्द बेवस हिमालय की प्रंशसा इन शब्दों में करते है।

, fgUn tk Igkjk] if[kjkt rkt okjk
Ukk I I e fu;kjk] efgtk fgeky; I;kjk
/kfjrhv eFkk o I h Fkk
vkdk’k Ik x I h FkkA
e’kg# ekfuIjko#] Ikiv fI/kv Ink ?k#
Hkkjr th vkI vk/kk#] [kVfu tk iV&ifjo#
db u| Hkj FkkA
ik.kh it ij FkkAA

¼col] fgeky; 1]2½

हिमालय की इसी प्रशंसा का भाव कालिदास ने अपने ग्रंथ ''कुमारसंभव में इस प्रकार किया है–

vLrÿkjL;k fnf’k nokRek fgeky;k uke uxkf/kjkt%A
iokijk rk;fu/kh oxká fLFkr% ifFkO;k bo ekun.MAA
;I lo’kyk% ifjdYI; oRI ejk fLFkr nkX/kfj nkgn{kA
HkkLofUr jRUkkfu egk"k/kh’p iFkifn"Vk nnqg/kfj=heAA

¼dekjIHko 1@1]2½

मनु महाराज ने नारियों के सम्मान के विषय में इतना तक कह दिया जहां स्त्रियों की पूजा होती है सभी देवता भी वहीं निवास करते है भारतीय संस्कृति में ''नारी तू नारायणी'' कहकर और पुरुष की अर्धांगिनी मानते हुए स्त्रियों को समाज मे महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। स्त्री ही शिव शक्ति के रूप में विद्यमान है। शक्ति के बिना शिव शव के समान है। इन्ही भावों को शायर बेवसि ने अपने इन शब्दों में प्रकट किया है–

Tkfg e ckj.k ,cj.k Fkk ck:n jg]
vkfg mu ykb mgk tkb tk efgnn jg]A

¼col] ukjh 1½

;= Ukk;Lr iT;r jeUr r= nork%A
;=rkLr u iT;Ur IokLr=kQyk% fd;k%A

¼euLEkfr 3@56½

नारी उस बारूद के समान है जिसमें जलने व जलाने का सामर्थ्य है नारी अगर चण्डी का रूप धारण कर ले तो वह संसार को भस्म भी कर सकती है और दुर्गा के रूप में भाव व भक्ति से भरकर कल्याण भी कर सकती है।

TkkbQk! lkj vxfj tkj r ifgt r vph]
dke e gn fdFk en u e:n jgA
Hkko ,l HkDrhv lk Hk;y rk e dyk dk ^cofl^]
Tfgr rf'kchg e ch HkV Fkh cIn jgA

¼cofl] ukjh 7]8½

सिन्धी साहित्य में साम्प्रदायिकता पर करारे प्रहार कर कौमी एकता का समर्थन किया है। राम और रहीम को एक ही मानकर उस परमात्मा के एक ही होने का समर्थन किया है।

jke pÅ] jgeku pÅ] efryc r fl/kk vYykg lk vkfg]
nhu pÅ ;k /ke pÅ] e'kk r mUghv t jkg lk vkfg]
b'd pÅ ;k ie pÅ] bnk r mUghv t pkg lk vkfg]
lk/k c.k ;k lkfyd F;] eDln r fny vkxkg lk vkfg]
v[kjfu t vk>M e vfM tk] e¶r u fnfy vktkjh dfj]

¼cofl@jke jgeku 1]½

Xkokeu do.kkuk {khjL;kl;Do.kkrkA
{khjor lk';r Kku fy³x eLr xok ;FkkAA

¼cãfcUnifu"kn 19½

बेवसि कहते हैं कि राम कहो या रहमान कहो मतलब तो उस एकमात्र ईश्वर से ही है, दीन कहो या धर्म कहो मंशा तो उस परमात्मा के मार्ग से है, इश्क कहो या प्रेम कहो इच्छा तो उस ईश्वर की चाह की है, मन्दिर कहो या मस्जिद कहो तात्पर्य तो उस परमात्मा के धाम से है। ना केवल हिन्दु–मुस्लिम एकता बल दिया गया है। अपितु भाइयों की आपस में लडाई का भी निषेध किया गया है। भाइयों की आपस की लडाई ना तो कुरान की तालीम है ना ही वेदों का फरमान है क्योकि वेदों में भी–

ek Hkkrk Hkkrj nh{ku

कह कर के भाई से भाई के द्वेष का निषेध किया गया है।

Hkkmfu ifgtfu lk.k yM.k] rbyhe bgk djku th ukfg]
Lkkp d;k e'kk fc bgk] dk onfu t Qeku th ukfg]
Lkp ip ekjkekjh vlyh] vknr dk bUlku th ukfg
[ku [kjkch] nx ckth dkfj bgk beku th ukfg
fcfu u.kfu gn Hkh ^cofl^ pht r fgfdMh fnfl t Fkh]
gj etgc t vnfj nl reht r fgfdMh fnfl t FkhA

¼cofl@jke jgeku 3]½

बेवसि ने ही हिन्दु और मुसलमान को एक ही माता की संतान मानते हुए लडाई झगडों को देश के लिए घातक बताया है।

pkfV pkf<v r o¥h igrk gh tkrh >fxMk]
gk vx fgUn e F;k gkf.k foykrh >fxMkA
ukfg Hkk³ t Hky yb] u l t ykb lBk]
dke dkfry tk c.;k] n'kd ?kkrh >fxMkA

¼cofl@tkfr >fxMk 1]2½

डॉ मोती प्रकाश ने इससे एक कदम आगे बढते हुए समाज में नफरत फैलाने वाली राजनीति को ही समाप्त करने का नजरिया प्रस्तुत किया।

mMk;k r[r ,rkt [k feVk;k lkekt [k]
bgk vkg tM Q lkn th]feVk;k fgu lekt [kA

¼flU/k llkj@MkO ekrh idk'k½

सिन्धी कवियों ने अपने काव्यों में देश और जन्मभूमि के प्रति अपनी भक्ति को भी भिन्न शब्दों के रूप में प्रकट किया है। लेखराज किशनचन्द अजीज ने देश की रक्षा के लिए एक क्या सैकडों सिर खुश होकर के कटवाने की बात कही है और वतन के प्रति फर्ज निभाने के लिए अपने लहु से भूमि को रंगीन करने का जज्बा प्रस्तुत किया है।

n'okj u fFk;k n'k ykb fl# ifgtk o<kb.k]
fgd fl# Nk] gtfu lo] r [kifu [k'k Fkh dikb.k]
ek [ku lk jxhu dUnfl nl th /kjrh]
fFk;k Qt oru lk ejh ugh fuckfg.kA

¼y[kjkt fd'kupUn vtht@ flU/kh lkO tk bfrgkl tryh½

डॉ0 दयाल आशा नें देश हेतु प्राणोत्सर्ग करने वाले लोगों के जीवन को ही सार्थक माना है।

0kru lfnd evk td] feVh frfu th lHkkxh]
Uk vk;k dke t de t] feVh frfu th vHkkxhA
folkfj;k u fofl j fl/kMh lgkjh]
tueHkfe e[k vk lx [kk fc l;kjhA

¼MkO n;ky vk'kk@flU/k llkj½

बेवस साहिब के शायरी स्कूल के शार्गिद प्रभु जोतुमल छुगानी उर्फ प्रभु वफा ने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को अपने इस कथन में व्यक्त किया है।

difg ek /kkxk&?kkx ek deM tk FkkuA
ckck gh tx lkjk vkg dVc lekuA

¼iHk oQk@flU/k llkj½

v; fut ijkofr x.kuk y?kpr lkeA
mnkjpfjrkuk r ol/ko dVEcdeAA

¼'kk³x/kj)fr 273½

वैदिक संगच्छध्वं संवदध्वं की भावना को सिन्धी सूक्ति ''पंजगंज'' कहकर संगठन की महत्ता को स्पष्ट किया है। और कहा है कि कुटुम्ब के बिना तो कुत्ता भी शोभायमान नहीं होता।

d|Mek [kk lokb d|Ÿkk fcu u l|gA

¼flU/kh igkdk i0l0 322½

मौन के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए मिर्जा कलीच बेग कहते है कि मनुष्यों को उत्तम विचारों कि प्राप्ती हेतु मौन की आवश्यकता है और सुन्दर वचन रूपी मोतीयों को छिपाए रखने हेतु मौन की आवश्यकता है।

t|xk, ekfB] xky.k ykb fur| menfu [k;kykfu t|]

tk ekfr;fu ykb Vkc| [k fc ij.k okr| ykft e vkA

¼fetk dyhp cx½

vfHkekuo xf) jk/kk}/k;r ri¼A

eku rukfr J;'p Jrl¥prk;ukrAA

¼/keke r 13@35½

''सेवा धर्म परमगहनः'' निश्चित रुप से सेवा का धर्म अत्यन्त गहन है जिसका निर्वाह प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता है। फिर भी हर धर्म, हर सन्त और हर साहित्य न सेवा करने पर बल दिया है। बेरागढ और पुष्कर के प्रसिद्ध सन्त श्री हिरदाराम सुख प्राप्ति का आधार बताया है।

c|<kckj ,| chekj vFko b|'oj tk ;kj]

D;k mUgfu th 'kok ikbl|nk l|[k vikjA

¼lUr fgjnkjke] i|"dj½

ना केवल आध्यात्मिक जगत् अपितु लौकिक जगत् में भी अहंकार कि प्रवृत्ति के त्याग और विनम्रता को धारण करने का उपदेश दिया है। शाह अब्दुल लतीफ ने पुनः पुनः खुदा (ईश्वर) की प्राप्ति के मार्ग में खुदी को (अंहकार) बाधक माना है।

dhu ekifu eu e|] [knh ,| [knkbA

fCkfu rjk#fu tkb] dkUg| fgd fe;k.k eA

^^vkÅ^^ lh mu ikj] d|nfg rk dku fo;kA

¼'kkg tk jlkyk@l|j ;eu dY;k.k½

ykHkkURkjQy'pkL; J)k;Drk fgrkn;¼A

{knkin|ogkfu'p f'k"Vk&lEerrk rFkkAA

¼;kxnf"V&lePp; 44½

अंहकार का त्याग और विनम्रता को धारण करना ही उस परमात्मा के दर्शन का एकमात्र मार्ग है। शाह साहब अपने एक कलाम में कहते है।

ऐ जीव! मरकर जीने या जीते जी मरने से लुम्हें प्रियतम परमात्मा का जलवा–जमाल, दर्शन–दीदार देखना नसीब होगा। यह सलाह मानने से तुम्हें उस दाता के दरबार में कबूल किया जाएगा।

Ekjh thm r ekf.k,|] tukc tk teky|A

fFk,| g|n gyky|] t| fi|n bgk g| ikfM,| AA

¼'kkg tk jlkyk½

;konHkkok áu|dk'p bfUn;kFkLrFko p A

;koPp eerkHkkoLrkonh'kk fg n|YkHkAA

¼LdUni|jk.k ek0 dk0 8@65½

निश्चित रुप से इस क्षणभंगुर जीवन में अंहकार का कोई स्थान नही होना चाहिए क्योंकि यह संसार और जीवन दोनों ही क्षण भंगुर है। कवि खीअलदास फानी ने जीवन को कांच के समान फूटने बाला एवं फिर ना जुडने वाला बाताया है।

g;kfr vkg 'kh'k Vkd|,| ft;k]
tk i|tk Fkh fc xf<;k u gnkA

¼ dfo [khvynkl Qkuh@ flU/k| l|lkj½

शायर शेख अयाज ने भी जीवन की क्षण भंगुरता इन शब्दों में व्यक्त की है

Rk dfj tk rk[k dfj.kk vkg] gh nkj fc ufB x|tfj.kk vk]
dfg oDr Mghflj| ekfj.kk vk] cuokl| x|tkj oink lhA
Ekfj.kk gjdfg ek.gv [k] ij ghv u lkFkh ejnklh]
dk vkx yxk, oink lh] dk ckj.k ckj oink lhA

¼'kk;j 'k[k v;kt@flU/k| l|lkj½

Uklrk fuxeL;kfi 'oklL; p egkeuA
io'k iR;;k UkkfLr ikrjkxeu dr¼AA

¼pk.kD; jktuhfr'kkL= 6@85½

कवि सामी ने तो वेदान्त के सिद्धान्तो का अनुसरण करते हुए जगत् को आभास मात्र ही माना है।

vFkh lHk| vHkkl|] txr gh txnhl j]
ft,| l|jt pUM e] lkeh lnk ijdkl|]
dj fMl| dfyir j ubufu ef> fuokl|
r p|ru| fpn vdkl|] gkt# fMl gFk r-A

¼lkehv tk lykd min'k@02½

समय के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए समय के सदुपयोग पर बल दिया है, क्योंकि बीता हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता है।

^^fo;y| oDr| okifl u bnk] ifNrkb.k ek d>| u ojnk]
Tkdh Fkhnk dj.k lk Fkhnk] uvk bfrgkl| Bkfg.kk ioinkA^^

¼flU/k| l|lkj i0l0 51½

dky [ky| lekjC/kk Qy c/ufLr uhr;%A

¼j?kqo'k 12@69½

समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रहार करते हुए कवि अर्जुन जेठानंद तनवाणी ने अधिकरियों को डाकू तक कहकर सम्बोधित किया है, और तत्कालीन भ्रष्ट समाज का वास्तविक चित्रण इस प्रकार किया है–

fgr gkde fc [kkbfu Fkk fj'or
Mkd vkfgfu gh r vkQhlj ukfgfu
fgr iVokyk irkbfu lknk
dj ponk gh n¶rj| vkgA

¼flU/k| l|lkj @vtu gkfln½

इसी प्रकार संस्कृत साहित्य की अनेकानेक सूक्तियों का शब्दानुवाद एवं भावानुवाद रूप भी सिन्धी साहित्य के सूक्तियों, लोकोक्तियों और कहावतों में दृष्टिगोचर होता है। सिन्धी साहित्य में सूक्तियों को पहाना एवं कहावतों को ''चवाणियूँ'' के नाम से अभिहित किया जाता है।

संस्कृत की सूक्तियों से सिन्धी साहित्य के पहाका एवं चवाणियूँ को तुलनात्मक रूप इस प्रकार विवेचित किया जा सकता है–

अकेलो खाए सो बिलो, वंडे खाए सो खण्डु खाए

doyknk Hkofr doyknh

आपु घाती महापापी

vl;k uke rs yksdk vU/ksu relkoŸkkA

rkLrs iszR;kfHkxPNfURk es ds pkReguks ujk%AA

उथु बि नाणो, वेहु भी नाणो, बिन नाणे नरु वे गाणो

जेकी करे नाणो सो न करे राणो

Vdk del Vdk ee% Vdk ,o ije /kEk%

कंडो कढे कंडे खे जहरु मारे जहरु से

d.Vdsuks d.Vde~

कन्दो सो भरिन्दो

;Fkk del rFkk Qye~

जिते वणु नाहे, उते कांडेरो दरख्तु

fujLr iknis ns'ks ,j.Mks·fi nzek;rs

तकदीर अगिया कहिडी तदिबीर

fyf[kra yykVs dks·fi ekt f;rq {ke

धीयरु आहिनी पराओ धनु

vFkkZ fg dU;k ijdh; ,o

न आए जी खुशीन वए जो गमु।

n%[ks"kq vuqf}Xueuk% lq[ks"kq foxrLi`g%

पीर खां वे साहु भलो–

J)koku~ yHkrs Kkue~

इस प्रकार अन्य भाषा और साहित्य की तरह सिन्धी भाषा और साहित्य में भी प्राचीन आर्ष मनीषा के, भारतीय संस्कृति के, और संस्कृत के सूक्तियों के, वेदों के उपदेशों के, उपनिषदों के दार्शनिक तत्त्वों के बीज भी यत्र तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होते है।

❖◆❖